शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

पुराणों में गंगा माहात्म्य
(नास्ति गणसमा नदी)

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 15.06.2021

डॉ0 उपासना सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
आर0जी0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ
ईमेलः upasana312bhu@gmail.com

सारांश

गंगा, जिस पर अनगिनत बातें, अनगिनत किताबें कही और लिखी जाती हैं। दशकों पूर्व गंगाजल की स्थिति कैसी थी और अब कैसी है ये पूछने या बताने की आवश्यकता नहीं है।

वर्तमान में गंगा की अविरलता, सफाई एवं सुन्दरीकरण के लिए सरकार द्वारा कई प्रकार के विशेष कार्यक्रम करवाये जाते हैं। हाल ही में 'गंगा यात्रा' का आयोजन किया गया था। इस साल के आये केन्द्रीय बजट में गंगा हेतु दोगुने से भी अधिक धनराशि आवंटित की गई है किन्तु सरकारी कागजों पर हर रोज साफ होने वाली गंगा वास्तविकता के धरातल पर प्रतिक्षण मैली होती जा रही है। मीडिया एवं सोशल मीडिया में 'नमामि गंगे' पर जुबानी जंग लड़ने वाले नेतागण अपने घर की गन्दगी इसी में बहाते हुए संकोच नहीं करते हैं। पतीत–पावन गंगा तट पर आज का युवा सेल्फी लेकर चिप्स के खाली पैकेट वहीं छोड़ आता है। ये तो है आज की गंगा लेकिन क्या वास्तव में गंगा प्राचीन समय में भी ऐसी थी? नहीं। लाखों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों द्वारा जिस गंगा की अलौकिकता को सिद्ध कर दिया गया था उसे अब जाकर भारत सरकार ने भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर माना है। सम्पूर्ण विश्व में माँ गंगा ही एक मात्र ऐसी नदी है जिसे मातृ स्वरूप माना गया है। किन्तु वर्तमान में माँ गंगा की स्थिति सर्वविदीत है। जीवंतता की प्रतीक तथा कई अनगिनत जीवधारियों के जीवन का एकमात्र आधार गंगा नदी सदियों से ही स्वयं में अक्षय इतिहास एवं संस्कृति को समेटे हुए है।

प्रस्तावना

सनातन हिन्दू धर्म में ईश्वर की सत्ता के अनन्तर धरती पर गंगा से बढ़कर कोई आराध्य नहीं है। बौद्ध, जैन आदि सम्प्रदायों में भी गंगा की पवित्रता एवं आध्यात्मिक शक्ति की विचित्रता को स्वीकार किया गया है। गंगा जल न केवल शारीरिक एवं भौतिक संतापों को शान्त करने वाला है प्रत्युत आन्तरिक एवं आध्यात्मिक शान्ति का अविनाशी बीज भी उसकी चंचल तरणों में बहता चला आ रहा है। कोई भी हिन्दू उसे नदी के रूप में न तो देखता है न दूसरों के मुख से सुनना चाहता है क्योंकि वह देवी एवं मातृ स्वरूपा है।

वैज्ञानिक भले ही सीसी–बोतलों में भरकर नई–नई खोज करके यह सिद्ध करें कि उसमें हिमालय की औषधियों का विचित्र प्रभाव है जो उसके जल में कीटाणु नहीं पड़ते किन्तु धार्मिक लोगों की वह पुण्यसलिला भगवान् विष्णु के पद से निकलने के कारण समस्त ऐतिहासिक और पारलौकिक व्याधियों को हरने वाली बनी ही रहेगी। गंगा के तटवासियों को नये वैज्ञानिकों के इस खोज से कोई विशेष प्रेरणा नहीं मिली, वे तो अनादि काल से ही गंगा के दर्शन, पूजन, ग्रहणपान तथा अवगाहन से ही स्वयं की तृप्ति एवं मुक्ति को मानता आ रहा है और मानता रहेगा। कठोर नास्तिक हिन्दू का ह्रदय भी गंगा तट पर पहुँच कर अपूर्व भावनाओं से भर जाता है। भविष्य में विज्ञान एवं तर्क के प्रचण्ड ताप में गंगा के धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना का कुछ ह्रास हो भी जाय फिर भी इसके वैज्ञानिक महत्व की पताका उस युग में भी फहराती रहेगी। गंगा जल का वैज्ञानिक महत्त्व भी चमत्कारों से भरा है। कई वर्षों तक पड़े रहने पर भी अन्य नदियों के जल की भाँति गंगा जल में कीड़े नहीं पड़ते। कुछ असाध्य रोगों को समूल नष्ट करने की क्षमता गंगाजल की अति प्रसिद्ध है। कुष्ठ के सहस्त्रों रोगी प्रतिवर्ष गंगा का सेवन कर आरोग्य लाभ लेते हैं। इसी प्रकार राजयक्ष्मा, पुरानी संग्रहणी, अजीर्ण के अन्य असाध्य उपद्रव, जीर्ण ज्वर एवं दमा को दूर करने की भी विचित्र शक्ति स्वच्छ गंगा जल में हैं।

गंगा जल की इस विचित्रता से आकृष्ट होकर अनेक पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने इसका शोध भी किया और उन सब का भी यही मत है कि गंगाजल में सामान्य नदियों के जल से कई गुना अधिक गुण है। इस प्रसंग में कुछ वर्ष पूर्व आगरा के सरकारी वैज्ञानिक विभाग के कर्मचारी मि0 हैनकेन का अन्वेषण कुछ विशेष मनोरंजक है। उक्त महोदय ने वाराणसी शहर के उस गंगा घाट का पानी लिया जिसमें शहर के गन्दे नाले का पानी आकर गिरता था। आरंभिक परीक्षण में उन्होंने देखा कि उस स्थल के गंगाजल में हैजे के लाखों बैक्टीरिया भरे हैं किन्तु छः घण्टे बाद ही उन्होंने देखा कि वे सब स्वयं ही मरकर नीचे बैठ गए और ऊपर गंगा का पवित्र जल लहराने लगा, इसी क्रम में उन्होंने कई संक्रामक रोगों के बैक्टीरिया गंगा जल में छोड़ा और छः घण्टे बाद देखा वो बिल्कुल मरे हुए पाये गये। जबकि अन्य नदियों के जलों में उन संक्रामक कीटाणुओं की संख्या कुछ घण्टे में ही असंख्य हो गयी थी।

अन्यान्य पाश्चात्य वैज्ञानिकों के शोध परिणाम भी इसी प्रकार हैं सबने एक स्वर में मुक्त कण्ठ से गंगाजल की प्रशंसा की तथा गंगा जल की अद्भुत शक्ति को स्वीकारा। प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों का तो कहना ही क्या, उनकी गंगा महिमा सुनकर आज के लोग आश्चर्य करेंगे। मृत्यु के समय रोगी के मुख में गंगाजल डालने की प्रथा आज भी है। साधारणतया लोग समझते हैं कि वह स्वर्ग प्राप्ति के लिए है, किन्तु गंगाजल में चेतना एवं शक्ति उत्पन्न करने के जो अमोघ गुण हैं उसके कारण भी यह प्रथा प्रचलित हुई होगी। कई पाश्चात्य डॉक्टरों ने प्रयोगों से तथा अनुभवों से सिद्ध करके यह बताया है कि शरीर के शक्तिपुंज जब जवाब देने लगते हैं, वाक्शक्ति विलुप्त हो जाती है, उस समय स्वच्छ गंगाजल का सेवन कराने से रोगी को पुनः शक्ति की प्राप्ति होगी। करोड़ों लोगों द्वारा संस्मृत, दर्शित ध्यानावस्थित, पूजित इस अजस्त्रवाहिनी गंगाधारा की समानता विश्व की कोई नदी नहीं कर सकती।

भारत के सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों के अनुयायियों ने गंगा का समान आदर किया। शैव लोग भगवान शंकर की जटा में विराजमान गंगा को ईष्टदेवी मानते हैं। शिवपुराण में गंगा की अपार महिमा का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार वैष्णवों की दृष्टि में धरती पर गंगा से बढ़कर

कोई तीर्थ ही नहीं है। सभी वैष्णव ग्रन्थों में गंगा तथा गंगाजल की आगाध महिमा का वर्णन है। शाक्त सम्प्रदाय में भी गंगा को अनादि शक्ति का एक रूप मानकर परम आराध्य स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार स्वामी शंकराचार्य, रामानुज, बल्लभाचार्य, रामानन्द, कबीर, तुलसी, चैतन्य महाप्रभु आदि आचार्यों तथा संतों ने तो गंगा जी को अपनी साधना का अविभाज्य अंग स्वीकार किया था। स्वामी शंकराचार्य ने अपने गंगाष्टक में कहा है –

विधिर्विष्णुः शम्भुस्त्वमसि पुरुषत्वेन सकला,
रमोमागीर्मुख्या त्वमसि ललना जह्नुतनये।
निराकारागाधा भगवति! सदा त्वं विहरसि,
क्षितौ नीराकारा हरसि जनतापान्स्वकिपया।।[1]

अर्थात् हे जह्नुतनये! तुम पुरुष रूप में ब्रह्मा, विष्णु और महेश हो और स्त्री रूप में तुम्हीं उमा, रमा तथा सरस्वती का रूप धारण करने वाली हो, हे परम ऐश्वर्यशाली! तुम ही निराकार ब्रह्ममयी और नितान्त अपार महिमा वाली हो। इस धरती पर तुम जल का रूप धारण कर जनता के सन्तापों को अपनी कृपा से दूर करती हो।

गंगा की यह अगाध महिमा चिरकाल से वाङ्मयी भारतीय प्रतिभा को प्रेरणा देती रही है। अखिल वेदों एंव शास्त्रों के गूढ़तत्वों को प्रकाशित करने वाले दिव्य पुराण गंगा के माहात्म्य एवं कथाओं से पटे पड़े हैं। गंगा की पावन कथा एवं महिमा प्रायः सभी पुराणों में विस्तृत रूप से प्राप्त होती है। ब्रह्मपुराण एवं वृहन्नारदीय पुराण में तो अनेक अध्यायों में गंगा की ही चर्चा है। वृहन्नारदीय पुराण में नारद के पूछने पर कि पृथ्वी में सबसे उत्तम क्षेत्र तथा पुनीत तीर्थ कहाँ है इस पर सनक जी उत्तर देते हैं –

स्मृतार्तिनाशिनी गण नदीनां प्रवरा मुने।
सर्वपापक्षयकरी सर्वोपद्रवनाशिनी।।
सर्वतीर्थाभिषेकाणि यानि पुणयानि तानि वै।
गणबिन्द्वभिषेकस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।
गण गणेति यो ब्रूयादयोजनानां शते स्थितः।
सोऽपि मुच्येत पापेभ्यः किमुगंणभिषेकवान्।।
विष्णुपादोऽवा देवी विश्वेश्वरशिरः स्थिता।
संसेव्या मुनिर्भिदेवैः किं पुनः पामरैर्जनैः।।[2]

अर्थात् यह गंगा स्मरणमात्र से पीड़ा को दूर करने वाली है, सभी नदियों में श्रेष्ठ है, सभी पापों को विनष्ट करने वाली है। विष्णु भगवान के चरणों से प्रकट हुई, विश्वेश्वर शिव के सिर पर स्थित भगवती गंगा का सेवन देवता इत्यादि भी करना चाहते हैं तो पामर मनुष्यों की तो बात ही क्या है। गंगा का स्नान भगवान विष्णु जैसा स्वरूप एवं पद देने वाला है। आगे इसी क्रम में गंगा महिमा को सनक जी कहते हैं –

नास्ति गणसमं तीर्थं नास्ति मातृसमो गुरु...।
नास्ति मोक्षात्परो लाभो नास्ति गणसमा नदी।[3]

संसार में पतितपावनी गंगा के समान कोई और नदी नहीं है। आगे कह रहे हैं पृथ्वी पर जितने भी तीर्थ हैं वो सब गंगा के कणमात्र की भी समानता नहीं कर सकते। तुलसी दल में पड़ा हुआ सरसों के बराबर भी गंगाजल इक्कीस पीढ़ियों को तारने वाला है।

पृथिव्यां यानि तीर्थानि पवित्राणि द्विजोत्तम्।
तानि सर्वाणि गणयाः कणस्यापि समानि न।।
तुलसीदलसंमिश्रमपि सर्षपमात्रकम्।
गणजलंपुनात्येव कुलानामेकविंशतिम्।।[4]

गंगा जल का दर्शन करने, स्तवन करने, भक्तिपूर्वक स्नान करने तथा गंगाजल का पान करने वालों को स्वर्ग, निर्मल ज्ञान, योग एवं मोक्ष इन सभी की प्राप्ति होती है।

गण पश्यति यः स्तौति भक्त्या पिबेज्जलम्।
स स्वर्गं ज्ञानममलं योगं क्षेमं च विन्दती।।[5]

इस जगत में वह मनुष्य श्रेष्ठ है जिसकी देह पर गंगाजल काएक कण भी गिर जाय इसी से वह मनुष्य महापातकों से मुक्त होकर परमपद को प्राप्त करता है –

गणस्नानपुराणां तु वाञ्छितार्थफलप्रदः।
गणजलकणेनापि यः सिक्तो मनुजोत्तमः।।
सर्वपापविनिर्मुक्त प्रयाति परमं पदम्।।[6]

गंगा महिमा को बताते हुए आगे महर्षि वसु रानी मोहिनी से कह रहे हैं – अतुल ज्ञान, ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा, दीर्घायु एवं शुभ कारक धर्म का पालन ये सब गंगा के दर्शन से ही प्राप्त होते हैं। इन्द्रियों की चंचलता, दुर्व्यसन, निर्दयता, कुटिलता, हिंसा, परकीय दोष, दम्भ ये सभी अवगुण भक्तिभाव से किए गए गंगा दर्शन से दूर हो जाती हैं।

ज्ञानमैश्वर्यमतुलं प्रतिष्ठायुर्यशस्तथा।
शुभानामाश्रमाणां च गंगादर्शन फलम्।।
सर्वेन्द्रियाणां चाऽल्यं व्यसनानि च पातकम्।
निर्घृणत्वऽ नश्यन्ति गण्दर्शन मात्रतः।।[7]

महारानी मोहिनी से आचार्य वसु कह रहे हैं कि अधिक क्या कहा जाय गंगा स्थान से पुण्य स्थान न कभी भूतकाल में हुआ न भविष्यकाल में होगा विशेषतया कलियुग में यह जाह्नवी पापों की नष्टकारी है।

गण स्नानत् परं स्नानं न भूतं न भविष्यति।
विशेषतः कलियुगे पापं हरति जाह्नवी।[8]

नारद पुराण में आचार्य वसु द्वारा गंगा को समस्त संसार (चर–अचर) के विष का नाश करने वाली कहा है।

स्थाणुजंगमसंभूतविषहंत्रि नमोऽस्तु ते।
संसारविषनाशिन्यै जीवनायै नमोनमः।।[9]

हजारों वर्ष पूर्व ऋषियों द्वारा पुराणों में कही गयी ये बात वर्तमान में भी सत्य सिद्ध हो रही है। शहर–गाँव, कारखानें इत्यादि दुनियाभर के विष (मैल–गन्दगी) को लोकपावनी गंगा ही स्वयं में आत्मसात कर रही किन्तु अब मनुष्यों के स्वार्थ की पराकाष्ठा ने सीमा लांघ दिया है। जिसका परिणाम हमारी आने वाली पीढ़ियों को भोगना पड़ेगा। विशालकाय नारदपुराण में आचार्य वसु एवं राजा रूक्मांगद की कथा के प्रसंग में गंगा को कलयुग का एकमात्र सर्वोत्तम तीर्थ तथा इसके तटवर्ती पुण्यक्षेत्र को सद्गति प्रदान करने वाला कहा गया है।

गणतीरे वसेन्नित्यं गणतोयं पिबेत् सदा।
यः पुमान् स विमुच्येत् पातकैः पूर्वसंचितैः।।[10]

इस पुराण में स्वयं भगवान विष्णु को ही द्रव्यरूप में गंगाजल हो जाने की बात कही गयी है। इसीलिए गंगाजल कभी पुराना एवं बासी नहीं होता नित्य नूतन एवं ताजा बना रहता है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के स्तुती खण्ड में गंगाध्यान तथा गंगस्तोत्र नामक अध्याय में विष्णुपदी जाह्नवी के अनुपम मनोरम स्वरूप का वर्णन किया गया है। इसी महापुराण के प्रकृतिखण्ड में नारद–नारायण संवाद में गंगोपाख्यान का विशद वर्णन किया गया है। स्कन्दपुराण के केदारखण्ड में भगीरथोपाख्यान में सर्वलोकमयी गंगा के सहस्त्रों नाम उल्लिखित हैं। स्कन्दपुराण के ही काशीखण्ड में गंगादशहरा स्तोत्र का वर्णन किया गया है।

विभिन्न पुराणों में समाहित गंगा की महिमा के अतिरिक्त वेदवन्दित सुरेश्वरी गंगा की महिमा में सम्पूर्ण संस्कृत का श्रीक्षेत्र आच्छादित है। श्री शंकराचार्य विरचित गणस्तोत्रम् में गंगा के स्वरूप एवं महिमा को अद्भुत चमत्कारिक शब्दों में उद्घाटित किया गया है।

देवि सुरेश्वरि भगवति गणे त्रिभुवनतारिणि तरलतरंे।
शऽरमौलिविहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले।[11]

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणियों को सुख प्रदान करने वाली हे मातः। तुम्हारा माहात्म्य वेदों में वर्णित है। मैं तुम्हारी महिमा को कुछ भी नहीं जानता।

पतितोद्धारिणी जाह्नवी गणे खण्डितगिरिवरमण्डितभंे
भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये
कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां पतति न शोके।
पारावारविहारिणि गणे विमुखवनिताकृततरलापांे।।[12]

अर्थात् हे देवी गंगे। तुम्हीं पतित जन का उद्धार करती हो, तुम्हीं ने गिरिराज का खण्डन किया है, जिसके ऊपर तुम्हारी भंगी लहरें अति सुशोभित हैं एवं तुम्ही भीष्म की जननी और जह्नु मुनि की कन्या हो त्रिभुवन में तुम्हारे अतिरिक्त पापनिवारिणी और कोई नहीं है, इसीलिये तुम्हें धन्या कहते हैं।

रोगं शोकं तापं पापं हर मे भगवति कुमतिकलापम्।
त्रिभुवनसारे वसुधाद्वारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे।[13]

अर्थात् हे भगवति! मेरा रोग, शोक, ताप, पाप एवं कुमति का हरण करो। त्रिभुवन की सार एवं पृथ्वी की अलंकार रूप हे देवी तुम्हीं से मेरी गति है।

श्री बाल्मीकरचित गंगाष्टकस्तोत्र में भी पापाहारि, त्रिपुरारिशिरच्चारि, झऽारकारि, तरण्धारि, मनोहारि सुरसरिकी महिमा का बखान किया गया है। गंगा के धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं आर्थिक पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले भारतीय वाङ्मय में इतने अधिक साहित्य मिलते हैं कि लिखने वाला किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो सकता है कि किसे लिखा जाय और किसे छोड़ा जाय। पुराणों के अतिरिक्त आचार ग्रन्थों में भी गंगा महिमा का विशद वर्णन है। गंगा की उत्पत्ति की कथा कुछ थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ प्रायः सभी पुराणों में एक–सी है। पुराणों में गंगा की अवस्थिति के विषय में भिन्नता है। वराह पुराण में बताया गया है कि कलियुग के अन्तिम चरण में पृथ्वी गंगा की धारा में विलीन हो जायेगी–

पृथ्वी गंगयाहीना भविष्यत्यनितमे कलौ।

गंगा की पावनधारा की कलकलमयी स्वर लहरी को सुनकर पापी का हृदय भी थोड़ी देर के लिए किसी दूसरे भाव में मग्न हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने एक ही चौपाई में गंगा के संबंध में वह सब कुछ कह दिया है जो परम प्राचीन काल से हमारे पूर्वज कहते आए हैं और जो भविष्य में नवीनतम् विज्ञान के प्रकाश में उत्पन्न होने वाली हमारी भावी पीढ़ियाँ सैकड़ों–सहस्त्रों वर्षों के बाद गंगा के सम्बन्ध में कहेंगी।

गंग सकल मुद – मंगल मूला।

सब सुख करनि हरनि सब सूला।

वर्तमान में किंकर्त्तव्यविमूढ़ हम भारतीयों का यही परम कर्त्तव्य बनता है कि हम सब मिलकर गंगा का स्वच्छ रखें और मुक्तकण्ठ से एक स्वर में कहें – गंगा तू बहती चल.....

सन्दर्भ ग्रंथ

1. शंकराचार्य कृत गंगाष्टक – श्लोक संख्या 22
2. वृहन्नारदीयपुराण–प्रथम खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक 12–15
3. वही – प्रथम खण्ड – गंगामाहात्म्य, श्लोक सं0 58–60
4. वही – प्रथम खण्ड – गंगामाहात्म्य, श्लोक सं0 124–125
5. वही – प्रथम खण्ड – गंगामाहात्म्य, श्लोक सं0 68–69
6. वृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 26–27
7. वृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 31–32
8. वृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 40
9. वृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 42
10. वृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 45
11. शंकराचार्य कृत गंगास्तोत्रम्
12. शंकराचार्य कृत गंगास्तोत्रम्
13. शंकराचार्य कृत गंगास्तोत्रम्

सहायक ग्रन्थ

1. पवृहन्नारदीय पुराण– प्रथम एवं द्वितीय खण्ड – सम्पादक श्री राम शर्मा आचार्य
   संस्कृति संस्थान, बरेली, संस्करण 1974
2. शंकराचार्य कृत गंगाष्टक